Place of Bio-Science in curriculum
पाठ्यक्रम में जीव विज्ञान का स्थान

जीव विज्ञान का अध्ययन हमारे दैनिक जीवन के कार्यों में विशेष भूमिका निभाती है। इसका अध्ययन अत्यंत ही लाभकारी तथा उपयोगी है। इसके अध्ययन से जो ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह ज्ञान अन्य बातों के ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है। किन्तु, इसके बावजूद 19वीं शताब्दी के मध्य तक पाठ्यक्रम में इसका प्रमुख स्थान नहीं था। सन 1860 ~~ई.~~ ई० के लगभग हरबर्ट स्पेन्सर ने लिखा, "हमारी सभ्यता के विकास में विज्ञान अत्यंत सहायक है। परंतु, इतना उपयोगी विषय होते हुए भी विद्यालयी पाठ्यक्रम (curriculum) में इसका स्थान निम्न है।" शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास करना माना जाता है। किन्तु, जब पाठ्यक्रम में ही विज्ञान खासकर जीवविज्ञान का समुचित स्थान न हो तो बौद्धिक विकास कहाँ तक

Scanned with CamScanner

संभव है। इन्हीं बातों को देखते हुए शिक्षाविदों ने सरकारी शिक्षा नीति निर्धारकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। तथा धीरे-धीरे पाठ्यक्रम में इसे आवश्यक विषय माना जाने लगा। इसकी महत्ता को स्वीकार करते हुए ~~इसे~~ पाठ्यक्रम ~~का~~ ~~अनिवार्य अंग माना~~ में प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य विषय के रूप में तथा ऊँची कक्षाओं में वैकल्पिक विषय के रूप में ~~इस~~ स्थान दिया गया तथा जीवविज्ञान की शिक्षा देने का ~~संकल्प~~ निर्णय लिया गया। इसी संदर्भ में वर्ष 1964 में यूनेस्को योजना आयोग (Unesco Planning Mission) ने अपनी रिपोर्ट द्वारा सामान्य विज्ञान शिक्षा जो प्रारंभिक स्तर पर तथा माध्यमिक स्तर पर दी जाती थी उसका विरोध किया तथा कहा कि मिडिल स्तर पर इसे समाप्त किया जाए और इसके स्थान पर छठी कक्षा से ही भौतिक विज्ञान तथा जीवविज्ञान की शिक्षा दी जाए। आगे सातवीं कक्षा से ~~की~~ रसायन विज्ञान की शिक्षा प्रारंभ की जाए। वर्ष 1961 में दिल्ली में NCERT की

Scanned with CamScanner

स्थापना के बाद, इस संस्था ने भी सामान्य विज्ञान की असफलता को देखते हुए जीवविज्ञान की शिक्षा प्रारंभिक स्तर से ही प्रारंभ की जाने की सिफारिश की। उन्होंने भी इस विषय को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान देने की बात कही। जीवविज्ञान के अंतर्गत प्रकृति में पाई जानेवाली सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है। शारीरिक स्वास्थ्य की जानकारी के लिए भी जीवविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए जीवविज्ञान को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान आज प्राप्त है क्योंकि इसके बिना सामान्य शिक्षा अधूरी रह जाती है। विज्ञान शिक्षा के द्वारा बालकों में ऐसे गुण उत्पन्न होते हैं जो उसके व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner